ओ३म्

शेखचिल्ली और लालबुझक्कड़

के कारनामे

(अनोखी कहानियाँ अनूठी सीख)

अरे ! सूरदे! क्या तेरे रोने से मेरा घी आ जायेगा?
अच्छा, तो क्या तेरे रोने से मेरा घर बन जाएगा?
अज्ञान और अन्ध विश्वास में सोचा कि इस लड़के को पकड़ लिया है और वह भी रोने लगी। यह देख बेटे का बाप भी बिना रोने लगा। उन दोनों को रोते देख अगल-बगल पड़ौसी भी रोने लगे।
हाय रे! मेरे लड़के को लड़के को पकड़ लिया है...!
हाय रे दय्या! इस लड़के को यमराज ने कैसा पकड़ लिया है कि छोड़ता ही नहीं...!
अब तो केवल लालबुझक्कड़ ही इसे छुड़ा सकता है।
जय गंगा मैया।
गंगा मैया! तू भी बड़ी विचित्र चीज है। इतने सारे लोगों का पाप लेकर तू तो बहुत बड़ी पापिन हो गई तुझे कौन सा नरक मिलेगा?
राजा करी कि-
आज से मेरा नाम 'राजा गवर्गण्ड' और मेरी नगरी का नाम 'अन्धेर नगरी'...
... और जो काम मेरे पिता व सभासद् करते थे, मैं सब काम उसके विपरीत करूँगा। जैसे...
... मेरे पिता व सभासद् रात में सोते और दिन में राज-कार्य करते थे, ठीक उसके विपरीत हम दिन में सोयेंगे और रात में राज-कार्य करेंगे। इसके अलावा हमारे राज्य में कैशर-कस्तूरी से
दोनों को अलग करने के बाद भी अबकी जुबान बन्द न हुयी—
अरे! मुँह संभाल कर बोल मैं तेरे को दिन में तारे दिखा दूंगा
यह बड़ा दुष्ट मनुष्य है।
नहीं तो तू क्या कर लेगा?

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित "व्यवहार भानु" के शिक्षाप्रद दृष्टान्तों पर आधारित चित्रकथाएं

ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ गुण

पुरुषार्थ (मेहनत)

बुद्धिवर्धक पदार्थों का सेवन करना

बुद्धिमत्ता (विवेक)

लोभ, लालच न करना

सुखी, सफल विद्यार्थी

स्थिरता-दृढता

घमंड न करना,
सरल रहना

प्रगतिशील रहना

समय बर्बाद न करना

निरंतर सफलता और उन्नति को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को ये अनमोल गुण ग्रहण करने चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

शेख चिल्ली और व्यापारी

किसी नगर में शेख चिल्ली नामक एक दरिद्र एवं मूर्ख व्यक्ति रहा करता था। उसी नगर में एक व्यापारी किसी से दस रुपये उधार लेकर घी लेने आया, घी का घड़ा लेकर वह किसी मजदूर की खोज में था। तभी वहाँ शेख चिल्ली आ पहुँचा–

जो बिना परिश्रम के पदार्थों की प्राप्ति में उत्साही होता हैं, उसी मनुष्य को विद्वान लोग मूर्ख कहते हैं।

व्यापारी ने शेख चिल्ली से पूछा–

क्यों भाई! इस घड़े को तीन कोस दूरी पर ले जाने की क्या मजूरी लेगा?

आठ आने।

चार आने दूंगा।

शुद्ध घी विक्रेता

शेख चिल्ली चार आने में मान गया...

...और घड़ा सिर पर रख कर चल पड़ा।

*बच्चो! केवल इच्छा करने से ही काम नहीं बनते, बुद्धि पूर्वक परिश्रम करने से ही सफलता मिलती है।

शेख चिल्ली घड़ा उठा कर आगे-आगे चलने लगा और व्यापारी उसके पीछे चलता हुआ मन में खयाल करने लगा।

दस रुपयों के इस घी के ग्यारह रुपये आयेंगे दस रुपये सेठ को दूँगा और...

...एक रुपया मैं रखूँगा, इसी तरह दस फेरे में दस रुपये हो जायेंगे...

घी

...इसी प्रकार दस से सौ, सौ से सहस्त्र, सहस्त्र से...

...लक्ष, लक्ष से करोड़, फिर करोड़ से सब जगह कोठियाँ बनाऊँगा और सब...

...राजे मेरे कर्जदार हो जाएँगे।

व्यापारी अपने मन में इस प्रकार के बड़े-बड़े खयाल करने लगा।

व्यापारी की तरह ही बड़े-बड़े खयाल शेख चिल्ली भी अपने मन में कर रहा था...

घी

चार आने की रुई से सूत कात कर बेचूँगा, उसके आठ आने मिलेंगे, फिर आठ आने से एक रुपया होगा,... इसी प्रकार एक से दो रुपये होंगे, उनसे एक बकरी लूँगा। जब उसके...

...बच्चे-कच्चे होंगे तब उनको बेच कर एक गाय लूँगा, उस के बच्चे-कच्चे बेच एक भैंस लूँगा, उसके बच्चे-कच्चे बेच एक घोड़ी लूँगा... उसके बच्चे-कच्चे बेच एक हाथिनी लूँगा और उसके बच्चे-कच्चे बेच दो बीवियाँ ब्याहूँगा।

घी

एक का नाम प्यारी और दूसरी का नाम बेप्यारी रखूँगा। और जब प्यारी के बच्चे गोद में बैठने आयेंगे तब उसे कहूँगा आओ बैठो पर...

* बच्चो! अपनी योग्यता और मेहनत के अनुसार ही अपनी चाहत और सपने होने चाहिए। नहीं तो दुःख ही मिलेगा।
उदाहरण : शेख चिल्ली, व्यापारी

ख्यालों में ऐसा विचार कर शेख चिल्ली ने असलियत में अपना सिर हिला दिया...

...जब बेप्यारी के बच्चे गोद में बैठने आयेंगे तब उनसे कहूँगा उँहूँ... उँहूँ नहीं... नहीं...

...सिर हिलाते ही घड़ा सिर से भूमि पर...

...गिर पड़ा और फूट गया। सारा घी भूमि पर फैल गया।

घड़ा स

घी के भूमि पर गिरते ही शेख चिल्ली जोर-जोर से रोने लगा, शेख चिल्ली को रोता देख व्यापारी ने उसे धमकाया...

घी क्यों गिरा दिया, और अब रोता क्यों है? तेरा क्या नुकसान हुआ? रोना तो मुझे चाहिए मैंने दस रुपये का घी लेकर बड़े-बड़े लाभ का मन में विचार किया था।

तेरी तो केवल दस रुपये की हानि हुई है। मेरा तो बना बनाया घर बिगड़ गया, मैं क्यों न रोऊँ...?

* बच्चो! हर काम सच्ची लगन और एकाग्रता से करना चाहिए। ख्यालों में खोकर काम करने से वह काम बिगड़ जाता है। उदाहरण : शेख चिल्ली का काम।

इस प्रकार दोनों में बहस छिड़ गई।

अरे! मूरख! क्या तेरे रोने से मेरा घी आ जायेगा?

अच्छा, तो क्या तेरे रोने से मेरा घर बन जाएगा?

फिर दोनों आपस में एक दूसरे को भला बुरा कहते, मार पीट पर उतर आये...

तू मूरख! तेरा बाप मूरख।

तू मूरख! तेरा पूरा खानदान मूरख।

...और एक दूसरे को गालियाँ देने लगे।

फिर मारपीट कर शेरव चिल्ली अपने घर की ओर भाग गया और व्यापारी ने धूल में मिले घी को ठीकरे में उठाकर अपने घर की राह ली।

*जो हमेशा बड़े-बड़े खयालों में खोया रहता है, मेहनत नहीं करता या थोड़ी सी ही मेहनत करता है उसे सफलता नहीं मिलती। सच्ची लगन और पूर्ण पुरुषार्थ से ही सफलता मिलती है।

* बच्चो! वाणी पर नियन्त्रण न रखने से और बेकार ही झगड़ने से कुछ नहीं मिलता, सिवाय दुःख और परेशानी के। देखो! शेरव चिल्ली और व्यापारी की दुर्गति।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

'महापण्डित' लालबुझक्कड़

एक गॉव में सारे ग्रामवासी महामूरर्ख थे। उसी गॉव में लालबुझक्कड़ भी रहा करता था, गॉव वाले उसे महापण्डित समझते थे। एक रात राजा का हाथी उस गॉव के पास से होकर आगे निकल गया। सुबह गॉववासियों ने हाथी के पैरों के चिह्न देखे तो परस्पर एक दूसरे को पूछने लगे...

क्यों भाई! यह किस के पैरों के चिह्न हो सकते हैं?

हमें पता नहीं!

पता नहीं!

मुझे भी पता नहीं!

फिर सर्वसम्मति से एक ही निर्णय लिया गया...

हमें 'महापण्डित' लालबुझक्कड़ को बुलाकर पूछना चाहिये।

हाँ!

* बच्चों यह कॉमिक्स केवल मनोरंजन के लिए नहीं। मनोरंजन के साथ-साथ उत्तम शिक्षा के लिए है। पढ़ो, कुछ सीखो, सफल हो जाओ।

फिर क्या था, सर्वसम्मति से 'महापण्डित' लालबुझक्कड़ को बुलाया गया—

लालबुझक्कड़ जी ! बताइये कि यह किसके पैरों के चिह्न हैं ?...

... आपके सिवाय कोई भी दूसरा मनुष्य इस समस्या का समाधान नहीं कर सकता ।

लालबुझक्कड़ पहले तो रोया फिर रोने के बाद हँसा ।

सभी गाँव वालों ने आश्चर्य से पूछा कि आप पहले क्यों रोये और फिर क्यों हँसे ।

मैं इसलिये रोया कि जब मैं मर जाऊँगा तब ऐसी समस्याओं का हल कौन करेगा?...

...और हँसा इसलिये कि... इस समस्या का हल बिल्कुल सहज है, सुनो ।

लालबुझक्कड़ बूझिया और न बूझा कोई।
पग में चक्की बाँध के हिरणा कूदा होई॥

मतलब यह कि, जंगल का कोई हिरण, मनुष्य की चक्की के पाटों को अपने पैरों में बाँध के कूदता चला गया है ।

* बिना परीक्षण किये किसी अज्ञानी और स्वार्थी को ज्ञानी और परोपकारी नहीं समझना चाहिए । इससे किसी का भी भला और उन्नति नहीं हो सकती। उदाहरण : गाँव वाले।

फिर सभी गाँव वालों ने लालबुझक्कड़ की वाह-वाह बोलकर उसका धन्यवाद किया और बोले कि–

आप जैसा पूरे संसार में कोई भी पण्डित नहीं है...

... जो ऐसी-ऐसी समस्याओं को सुलझा सके।

लालबुझक्कड़ की जय!

एक ग्रामीण महिला जंगल से अपने बेटे के लिए कुछ बेर ले आयी। उसका बेटा घर पर छप्पर का खंभा पकड़ कर खेल रहा था। महिला ने उससे कहा... बेटा! बेर लो। बेटे ने खेलते-खेलते ही खंभे से दोनों हाथ आगे बढ़ा दिये। मां ने उसके हाथों में बेर रख दिये... और बोली–

ले बेटा! बेर खा।

...बेटे ने तुरन्त बेर खाना चाहा। पर, हाथों और मुँह के बीच में खंभा होने की वजह से उसका मुँह 'बेर तक' और हाथ 'मुँह तक' नहीं पहुँच पाये। वह अपने बेर खोना नहीं चाहता था, इसलिए अंजलि से बेर नहीं छोड़ रहा था। बीच में खंभे की वजह से बेर खा भी नहीं पा रहा था। इसलिए वह रोने लगा।

* अयोग्य और मूर्ख व्यक्ति की कभी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। इससे वह पूरे समाज का नुकसान करता है। उदाहरण : लालबुझक्कड़ की प्रशंसा।

बेटे को रोता देख मां घबरा गयी। उसने अपने अज्ञान और अन्ध विश्वास में सोचा कि इस खम्भे ने मेरे लड़के को पकड़ लिया हैं और वह भी रोने लगी। यह देख बेटे का बाप भी बिना विचारे रोने लगा। उन दोनों को रोते देख अलानी अड़ोसी-पड़ौसी भी रोने लगे।

हाय रे! मेरे लड़के को खम्भे ने पकड़ लिया रे...!

हाय रे दय्या! इस लड़के को खंभे ने कैसा पकड़ लिया हैं कि छोड़ता ही नहीं...!

अब तो केवल लालबुझक्कड़ ही इसे छुड़ा सकता हैं।

तब सर्व सम्मति से लालबुझक्कड़ को तुरन्त बुलाया गया और उससे पूछा गया कि यह लड़का इस खम्भे से कैसे छूट सकता हैं? लालबुझक्कड ने लड़के की माँ से पूछा—

क्यों बहन! यह सब कैसे हुआ... मुझे पूरी बात बताओ?

मेरा बेटा खम्भे को पकड़ कर खेल रहा था, मैंने उसे बेर दिये, उसने दोनों हाथ बढ़ा-कर बेर ले लिये। और तब से रो रहा हैं। ऐसा लगता है कि-इस खम्भे ने मेरे बेटे को पकड लिया हैं और छोड़ नहीं रहा इसलिए मेरा बेटा रो रहा हैं।

लालबुझक्कड़ ने सारी बात बूझ कर कहा—

* अज्ञान और अन्धविश्वास, हमेशा सम्पूर्ण परिवार और समाज को दुःख में डाल देता हैं। इसलिए कभी भी अन्धविश्वास में नहीं पड़ना चाहिए। देखो - बच्चे की माँ के अज्ञान के कारण और अन्धविश्वास ने सारे गाँव को दुःख में डाल दिया।

सुनो गाँव वालो! यह लड़का दो उपायों से छूट सकता है। या तो कुल्हाड़े से इसका एक हाथ काट दो तो यह खम्भे से छूट सकता है। या छप्पर को उखाड़ कर नीचे रखो फिर खम्भे के ऊपर से लड़के को उतार ले आओ।

लालबुझक्कड़ की बात सुन कर लड़के का बाप बोला—

हम तो गरीब आदमी हैं अगर हमारा छप्पर टूट जायेगा तो हम उसे दोबारा नहीं बना पायेंगे।

तब लालबुझक्कड़ बोला—

तो फिर लाओ कुल्हाड़ा, अभी एक हाथ काट कर लड़के को इस खम्भे से मुक्ति दिला देते हैं।

अभी वह लड़के का हाथ काटने जा ही रहे थे, तभी भीड़ को देख और शोर शराबा सुन कर दूसरे गाँव की एक बुद्धिमती स्त्री वहाँ आ पहुँची और देख-कर बोली—

रुको! तुम लोग इस लड़के का हाथ मत काटो, मैं इसे अभी इस खम्भे से मुक्ति दिला देती हूँ।

* अज्ञानी और पाखंडियों का सुझाया समाधान हमेशा खतरनाक, नुकसानदेह और जानलेवा भी होता है। अतः उनसे हमेशा दूर रहना चाहिए। देखो- लालबुझक्कड़ का सुझाया समाधान कितना नुकसानदेह और खतरनाक था।

फिर वह औरत उस खम्भे के पास पहुँची और अपने हाथों की अंजली बनाकर लड़के के हाथों के नीचे रखकर बोली—

बेटे! अब तुम अपने हाथों के बेर मेरे हाथों में छोड़ दो।

जब लड़का बेर छोड़ कर खम्भे से अलग हो गया तो उस स्त्री ने वह बेर उसे दे दिये, लड़का रोना छोड़ कर खुशी से बेर खाने लगा।

यह सब देख लाल बुझक्कड़ आग बबुला हो गया और गुस्से में लड़के के मां-बाप को बूरा-भला बोलने लगा।

सुनो! यह तुम्हारा लड़का छह महीने के भीतर मर जायेगा, क्योंकि तुमने मेरी बात नहीं मानी।

लालबुझक्कड़ की बात सुनकर लड़के के मां-बाप घबरा गये।

तब उस बुद्धिमती स्त्री ने लड़के के मां-बाप को समझाया—

यह सब झूठ है, अगर इसके कहे पर चलते और लड़के का हाथ काट दिया जाता तो लड़का अभी मर जाता, तब तुम क्या करते, मरण से बचने की कोई दवा नहीं होती।

तब उनकी घबराहट छूट गयी—

* मनुष्यों को कभी भी ढोंगी और पाखंडियों का संग नहीं करना चाहिए और उनके वचनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

अधर्मी दुकानदार अधर्मी ग्राहक

*वह मनुष्य धन्य हैं जो सब व्यवहारों को सत्य के द्वारा करते हैं और स्वप्न में भी अपने व्यवहार में असत्य का सहारा नहीं लेते।

एक बार एक अधर्मी दुकानदार के पास एक अधर्मी ग्राहक गया—

क्यों भाई! यह वस्त्र कैं रुपये प्रति मीटर दोगे?

पचास रुपये मीटर तुम भी कुछ कहो।

दुकानदार और ग्राहक दोनों ही जानते थे कि यह वस्त्र तीस रुपये मीटर से अधिक नहीं है...
"परन्तु अधर्मी कभी झूठ बोलने से नहीं डरता।

बीस रुपये मीटर दो, और सच-सच लेने देने की बात करो।

ग्राहक और दुकानदार दोनों ही असत्य का सहारा लेकर मोल-भाव करने लगे।

* बच्चो! झूठ बोलनेवाले व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता। उसकी बात पर सभी माँ, पापा, भाई, बहन भी विश्वास नहीं करते। इसलिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए।

ग्राहक की बात सुनकर दुकानदार बोला–

अच्छा, तो पाँच रुपये पैसा कम कर देते हैं। पैंतालीस रुपये दो।

है तो घाटा, परन्तु तेईस रुपये ले लो।

मैं सत्य कहता हूँ। इस वस्त्र का छब्बीस रुपये से ज्यादा कोई भी तुम्हें नहीं देगा।

चलो पाँच रुपये और कम कर देते हैं। चालीस रुपये मीटर दे दो।

'परमेश्वर की सौगन्ध' छत्तीस रुपये मीटर तो मुझे पड़ा है। तुम्हें 'भला-मनुष्य' जान कर दे रहा हूँ।

'धर्म की सौगन्ध', अगर तुम्हें अठाईस रुपये मीटर देना है तो दो, नहीं तो मैं दूसरी दुकान पर जाता हूँ...

क्या तुम्हारी ही एक दुकान है ?

* एक झूठ को छिपाने या सही साबित करने के लिए अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं और झूठी कसमें भी खानी पड़ती हैं। उदाहरण: झूठा दुकानदार और झूठा ग्राहक।

ग्राहक धीरे-धीरे आगे चला कि मुझे यह बुलाता है या नहीं, दुकानदार तिरछी नजर से ग्राहक को देख रहा था कि वह लौटता है या नहीं। जब लगा कि अब वह लौटने वाला नहीं है तो दुकानदार ने आवाज लगाई—

दुकानदार समझा कि यह तो गया हाथ से, उसने उसे बुलाया और बैठाया—

* बच्चो! सत्य के सहारे काम सरल बनता है और तुरन्त सिद्ध होता है। झूठ के सहारे किये जाने वाले काम में बहुत सा समय बरबाद हो जाता है। देखो- ग्राहक और दुकानदार का कितना समय बरबाद हो गया।

दुकानदार ने नापने में कुछ हेराफेरी की यह देख ग्राहक बोला–

भाई ! तुमने कपड़ा ठीक से नहीं नापा है।

तुम्हें हम पर विश्वास नहीं है। हम खानदानी व्यापारी है, बेईमानी नहीं करते।

अजी देखा ! बड़े ईमानदार बनते हो। पचास रुपये मीटर कह कर, तीस रुपये पर आये। बीस रुपये घट गये, और अनेक प्रकार की सौगन्धें खाईं वह अलग।

वाह जी ! तुम बड़े सच्चे हो, बीस रुपये मीटर कह कर तीस रुपये तक लेने को तैयार हो। और अपने आपको ईमानदार समझते हो।

दोनों आपस में एक दूसरे को बेईमान व झूठा कह कर झगड़ने लगे।

छोड़, तू तो बड़ा झूठा है।

क्या तू नहीं है ?

सवा मीटर कपड़े के लिए कोई 'भला-मनुष्य' झगड़ा करता है?

तू झूठा, तेरा बाप भी झूठा !

तू झूठा, तेरी सात पीढ़ी झूठी।

ग्राहक ने व्यापारी को एक जूता दे मारा जवाब में व्यापारी ने भी ग्राहक को 'गज' दे मारा।

* बच्चो ! बार-बार झूठ बोलने से आदत बिगड़ जाती है और वह धीरे-धीरे बेईमान भी बन जाता है। देखो : झूठा दुकानदार किस तरह बेईमानी करने लगा है।

ग्राहक और दुकानदार दोनों आपस में गुत्थम-गुत्था हो गये, पड़ोसी दुकानदारों ने दोनों को छुड़ाया।

चल-चल! जा, तेरे जैसे लाखों देख रखे हैं।

चल बे, तेरे जैसे टटपूंजिये दुकान दार मैंने करोड़ों देखे हैं।

जाओ! तुम अपनी दुकान पर बैठो और तुम अपने घर जाओ।

दोनों को अलग करने के बाद भी उनकी जुबान बन्द न हुयी—

यह बड़ा दुष्ट मनुष्य है।

नहीं तो तू क्या कर लेगा?

अरे! मुँह संभाल कर बोल।

मैं तेरे को दिन में तारे दिखा दूंगा।

* शिक्षा- अधर्म और असत्य 'झूठ' से कभी सच्चा सुख और शान्ति नहीं मिलती, इसलिए हमेशा धर्म और सत्य का ही आचरण करना चाहिए।

* बच्चो! झूठ से किसी का भी भला नहीं होता, खुद झूठ बोलने वाले का भी नहीं। झूठ से हमेशा वैर और नफरत बढ़ती है। देखो: ग्राहक और दुकानदार आपस में कैसे झगड़ने लगे।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

आत्मा और परमात्मा - साक्षी

एक समय की बात है, किसी धार्मिक विद्वान के पास पढ़ने के लिए दो विद्यार्थी आए। विद्यार्थियों ने विद्वान के पास आकर कहा—

गुरुजी! क्या आप हमें पढ़ायेंगे?

क्यों नहीं! परन्तु पहले तुम दोनों को मेरा एक काम करना होगा।

गुरुजी की बात सुनकर विद्यार्थियों ने कहा-

हम तैयार हैं गुरुदेव, आप आज्ञा करें!

अच्छा! तो ध्यान से सुनो।

* बच्चो! विद्यार्थियों को हमेशा अपने 'बड़ों का' और गुरुजनों का आदर करना चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। और विवेकी गुरुजनों को भी यदा-कदा अपने विद्यार्थियों की समझ और विवेक का परीक्षण करना चाहिए। उदाहरण: विद्वान गुरु व विद्यार्थी।

गुरु ने कहा-

तुम दोनों के साथ मैं अपना एक शिष्य भेजता हूँ।.

...तुम दोनों बारी-बारी से इसको एकान्त में ले जाकर जहाँ कोई भी ना देखता हो...

... वहाँ इससे कान पकड़ाकर 'उठक-बैठक' लगवाओ और धीरे से एक-दो थप्पड़ मार के वापिस मेरे पास ले आओ।

जो आज्ञा गुरुदेव!

फिर दोनों में से पहला विद्यार्थी गुरु के शिष्य को एकान्त में ले गया और चारों ओर देखा कि हमें कोई देख तो नहीं रहा। जब उसे लगा कि...

एक... दो... तीन...चार...

...वहाँ और कोई नहीं, तब गुरु की आज्ञानुसार गुरु वाले शिष्य को कान पकड़ा कर चार-पांच उठक-बैठक करवायीं और...

...एक दो थप्पड़ मारी। उसके बाद दूसरा विद्यार्थी उसी शिष्य को एकान्त में ले गया और गुरु के वचन का अभिप्राय सोचने लगा।

यह स्थान एकान्त कैसे हो सकता है? यहाँ तो मैं लड़के को और लड़का मुझे देख ही रहा है।

यह सोचकर दूसरे विद्यार्थी ने गुरु वाले शिष्य के साथ कुछ नहीं किया।

* बच्चो! उतावलापन अच्छी बात नहीं। हर काम में अपने विवेक का प्रयोग करना चाहिए। बड़ों की बात ही नहीं, उसके पीछे उनका उद्देश्य भी समझना चाहिए। देखो: पहले विद्यार्थी ने केवल उतावलापन दिखाया, जबकि दूसरे ने विवेक से काम लिया।

फिर दोनों विद्यार्थी गुरुजी के पास आये, गुरु ने दोनों से पूछा–

जो कार्य हमने तुम दोनों से कहा था वह कार्य कर आये ?

हाँ!

नहीं!

दूसरे विद्यार्थी की ना सुनने पर–

हमने जो कार्य तुम्हें करने के लिये कहा था, वह कार्य क्यों नहीं किया?

* बच्चो! दिया हुआ कार्य समय पर समाप्त कर बड़ों को दिखाना अच्छी आदत होती है। इससे आपकी तरक्की होती है और बड़ों का प्यार व स्नेह मिलता है। उदाहरण: दोनों विद्यार्थी।

दूसरे विद्यार्थी ने कहा–

क्यों कि आपने मुझसे कहा था कि जहाँ कोई भी न देखता हो वहाँ यह कार्य करना है।...

...और गुरुजी! वहाँ एकान्त होने पर भी 'आपका शिष्य मुझे और मैं आपके शिष्य' को देख रहा था। और इसके अलावा परमात्मा तो सर्व-व्यापक और सर्व-साक्षी है। वह हर जगह है और प्रत्येक कार्य को देखता है। इस कारण मैं आपके आदेश का पालन न कर सका।

उसकी बात सुनकर गुरु जी बोले–

?

तू बुद्धिमान और धार्मिक है। इसलिए मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाता हूँ। परन्तु...

...तुम्हारा साथी इस योग्य नहीं है इसलिए उसे यहाँ से जाना होगा।

शिक्षा – हम जो भी कर्म करते हैं, आत्मा-परमात्मा हमेशा उस कर्म का साक्षी होता है, इसलिए मनुष्य को उनके अनुकूल कर्म करना चाहिये।

* बच्चो! 'कोई नहीं देख रहा' ऐसा सोचकर कभी गलत काम, पाप मत करना। ऐसा करके हम माता, पिता, गुरु, पुलिस की नजर और सजा से तो शायद बच जाये, पर परमात्मा की नजर और सजा से नहीं बच सकते। देखो- दूसरे विद्यार्थी की सोच व विवेक।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

राजा 'गवगंड'

॥ अन्धेर नगरी गवगंड राजा।
टके सेर भाजी टके सेर खाजा॥॥

प्रकाशवती नगरी का राजा धर्मपाल बड़ा ही विद्वान, धार्मिक व अपनी प्रजा का अपने बच्चों की तरह पालन-पोषण करने वाला था। एक दिन अचानक उसकी मृत्यु होने के कारण उसके बेटे को गद्दी पर बैठाया गया।

वह अपने पिता के विपरीत अधर्मी और मूर्ख था। उसने गद्दी पर बैठते ही सभा में घोषणा कर दी कि—

तब बड़े-बड़े धार्मिक सभासद बोले कि—

तब मूरख राजा बोला कि—

* बच्चो! हमेशा यह बात याद रखो कि कभी किसी बेईमान और बुद्धिहीन मूरख को राजा या नेता नहीं चुनना चाहिए। इससे सारा देश संकट में पड़ता है। उदाहरण : पूरी कहानी।

तब विद्वानों ने दुःखी मन से कहा–

'विनाश काले विपरीत बुद्धि!'

जिसका शीघ्र नाश होना होता है, उसकी बुद्धि पहले से ही विपरीत हो जाती है।

चलो! यहाँ अपना निर्वाह नहीं हो सकेगा।

और वे उसी समय 'प्रकाशवती' नगरी को छोड़कर चले गये।

और महामूर्ख, धूर्त, खुशामदी लोगों की मण्डली राजा के साथ हो गई। फिर राजा ने घोषणा करी कि–

आज से मेरा नाम 'राजा गवर्गण्ड' और मेरी नगरी का नाम 'अन्धेर नगरी'...

... और जो काम मेरे पिता व सभासद् करते थे, मैं सब काम उसके विपरीत करूँगा। जैसे...

... मेरे पिता व सभासद् रात में सोते और दिन में राज-कार्य करते थे, ठीक उसके विपरीत हम दिन में सोयेंगे और रात में राज-कार्य करेंगे। इसके अलावा हमारे राज्य में केशर-कस्तूरी से लेकर मिट्टी, सब चीज एक टके सेर बिकेगी।

* बच्चो! धूर्त और खुशामदी लोगों से दूर रहना चाहिए। क्योंकि उनका हर कार्य उलटा और मूर्खता पूर्ण होता है। देखो - राजा गवर्गण्ड के काम, कितने उलटे और मूर्खतापूर्ण हैं।

राजा की मूर्खता भरी बातों की प्रसिद्धि देश-देशान्तर तक फैल गई। एक जगह दो गुरु-चेले अखाड़े में मल्ल विद्या करते हुए एक समय में पाँच-पाँच सेर भोजन कर लिया करते थे।

गुरुजी! अन्धेर नगरी चलिए। वहाँ हर चीज टके सेर मिलती है, हम वहाँ दस टके की दस सेर मलाई खाकर खूब तगड़े हो जाएँगे
चेले! वहाँ राजा गवर्गण्ड का राज्य है, किसी दिन खाया-पिया सब बाहर आ जाएगा और प्राण बचाना भी कठिन हो जाएगा।

परन्तु जब चेले ने अन्धेर नगरी जाने के लिए हठ किया, तब गुरु को भी मोह के मारे जाना पड़ा। वहाँ जाकर दोनों एक बगीचे में निवास करने लगे और खूब माल चबाने लगे। दोनों के दिन बड़े आनंद से कट रहे थे।

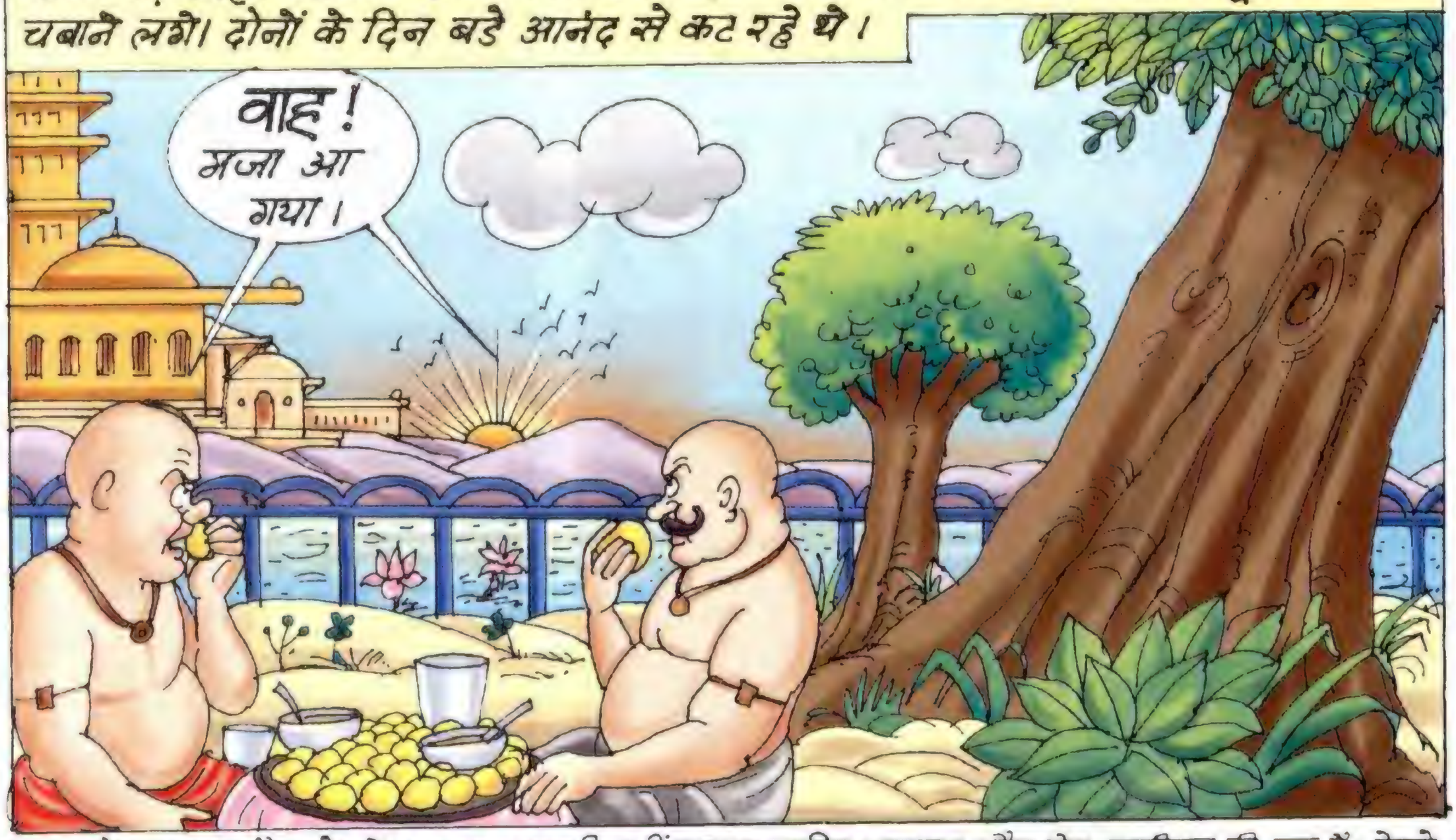

* बच्चो! लालच और मोह में पड़कर आलसी नहीं बनना चाहिए। लालच और मोह मुसीबत की जड़ हैं। देखो- 'लालच से चेला' और 'मोह से गुरु' किस मुसीबत में पड़ेंगे।

एक समय आधी रात को किसी साहूकार का नौकर एक हज़ार रुपये से भरी थैली लेकर जा रहा था। रास्ते में 'उचक्के' नौकर के हाथों से रुपयों वाली थैली छीन कर भागे। नौकर चिल्लाया, राजा के सिपाहियों ने उसकी आवाज सुनी तो दौड़े आये और पूछा-

सिपाहियों ने वहाँ से धीरे- धीरे आगे चलकर किसी भले आदमी को पकड़ लिया और राजा के सामने ले जाकर कहा—

शूली, लोहे की बरछी के समान अणीदार होती हैं। उस पर मनुष्य को उलटा लेटा कर उसकी नाभी में शूली की अणी लगा देते हैं। धीरे- धीरे अणी मनुष्य के आर-पार निकल जाती हैं और वह मर जाता हैं।

राजा गवर्गण्ड के नौकर भी उसी के समान मूरर्ख और मनमानी करने वाले थे। जब उन्होंने देखा कि... 'शूली मोटी है और आदमी पतला हैं, तो अपनी मूरर्खता से सोचने लगे...।

* बच्चो ! जीवन में कभी पाप मत करना। क्योंकि पापी व्यक्ति सत्य-असत्य का विचार नहीं करता। उदाहरण: राजा और उसके सिपाही। भला, यह कोई तरीका हैं सजा देने का !!

सिपाहियों ने यह समस्या राजा को बताई। सारी बात सुनकर राजा ने हुक्म दिया कि—

इस आदमी को छोड़ दो और इसके बदले में शूली के बराबर जो मोटा आदमी हो, उसे शूली पर चढ़ा दो।

जो हुक्म महाराज!

अब सिपाहियों ने शूली के बराबर मोटे आदमी को खोजना आरम्भ कर दिया, तभी किसी ने बताया कि शूली पर चढ़ने योग्य मोटे आदमी तो बगीचे वाले गुरु-चेले हैं। और उसमें भी चेला गुरु से ज्यादा मोटा है। फिर क्या था, सिपाही बगीचे में गये और चेले से कहा—

महाराज का हुक्म है, शूली पर चढ़ने के लिए चल।

परन्तु, हमने तो कोई अपराध नहीं किया है।

अपराध तो नहीं किया है, परन्तु तू ही शूली के बराबर है, हम क्या करें?

क्या, दूसरा कोई नहीं है?

नहीं, ज्यादा सवाल मत कर। चल, महाराज का हुक्म है।

* बच्चो! जीवन में कभी पाप मत करना। क्योंकि पापी व्यक्ति सत्य-असत्य का विचार नहीं करता। उदाहरण: राजा और उसके सिपाही। भला, यह कोई तरीका है सजा देने का!!

जाते-जाते चेले ने गुरु से पूछा।—

गुरुदेव! अब क्या करना चाहिए?

मैंने तुझे पहले ही मना किया था कि अन्धेर नगरी में आना एक दिन महँगा पड़ेगा। अब रवाया पिया सब निकल जाएगा।

गुरुजी! अब इस संकट से निकलने का कोई उपाय बतायें तो किसी दूसरे देश निकल जायेंगे।

गुरु ने चेले को इस संकट से बचने का एक उपाय बताया—

इस संकट से बचने का केवल एक ही उपाय है। शूली पर चढ़ते समय मैं तुझसे कहूँ कि 'शूली पर मैं चढूँगा', और तू मुझसे कहे कि 'शूली पर मैं चढूँगा' बस, इस तरह तकरार करने से बचने का कोई ना कोई उपाय अवश्य निकल आएगा।

यह सारा वार्तालाप गुरु-चेले ने किसी दूसरे देश की भाषा में किया। सिपाही कुछ समझ नहीं पाए।

शूली के पास पहुँचते ही गुरु, चेले आपस में लड़ने लगे—

शूली पर मैं चढूँगा।

नहीं शूली पर मैं चढूँगा। चेले का धर्म नहीं कि उसके सामने गुरु शूली पर चढ जाए।

मेरा भी धर्म नहीं कि मेरे सामने मेरा चेला शूली पर चढ़ जाए।

यह सब तमाशा राजा गवर्गण्ड के सिपाही देख रहे थे। उन्होंने दोनों से पूछा—

तुम दोनों शूली पर चढ़ने के लिए क्यों लड़ रहे हो?

यह मत पूछो, हमें शूली पर चढ़ने दो। क्योंकि दोबारा ऐसा शुभ समय मिलना दुर्लभ है।

* बच्चो! मुसीबत में पड़ने पर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि नीति से काम लेना चाहिए। देखो: गुरु और चेले ने कैसे नीति से काम लिया। 'मनोरंजन और नीति' के लिए हितोपदेश जैसी पुस्तकें पढ़ो। पुस्तक के लिए हमसे सम्पर्क करो।

सिपाहियों ने गुरु-चेले के लड़ने वाली बात राजा गवर्गण्ड से कही —

महाराज! वह दोनों 'गुरु-चेले' शूली पर चढ़ने के लिए आपस में लड़ रहे हैं।

क्या? हम स्वयं वहाँ जाकर देखेंगे।

राजा स्वयं अपने मूरख सभासदों को ले कर गुरु-चेले के पास पहुँचा।

तुम दोनों शूली पर चढ़ने के लिए आपस में क्यों लड़ रहे हो?

महाराज! आप हमसे यह बात मत पूछो और हमें शूली पर चढ़ने दो। क्योंकि शुभ अवसर निकला जा रहा है, ऐसा अवसर बड़े भाग्य से मिलता है।

इस समय शूली पर चढ़ने का क्या फल होगा?

दूसरे से कहने की बात नहीं है महाराज! पर आप हठ करते हो तो सुनो, इस समय जो भी शूली पर चढ़ेगा वह विमान में बैठकर सीधा स्वर्ग जायेगा।

ओह! ऐसी बात है, तो शूली पर मैं स्वयं चढ़ जाता हूँ। तुम्हें नहीं चढ़ने दूँगा।

ऐसा कहकर राजा गवर्गण्ड ने अपने आप ही शूली पर चढ़कर प्राण छोड़ दिए। चेले ने गुरु से कहा कि हमें यहाँ नहीं रहना चाहिए, गुरु ने कहा कि अब कोई चिन्ता नहीं। जो पाप की जड़ था वह स्वयं ही मर गया। अब धर्म से राज्य होगा, इसलिए यहीं रहो।

फिर गवर्गण्ड के छोटे भाई को गद्दी पर बैठाया गया और धर्म से राज्य की व्यवस्था चलने लगी।

* बच्चो! तेज दिमाग और नीति से न केवल अपने बल्कि सब के दुःख दूर करने चाहिए। उदाहरण: गुरु और चेले ने अपनी बुद्धि और नीति से सारे नगर वासियों को मुसीबत से छुटकारा दिलाया।

पटकथा- संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

गंगा स्नान और हमारे पाप

बालक धर्म प्रकाश की आयु 8-10 वर्ष होगी, लेकिन वह बुद्धिमान बहुत था। हर चीज को बड़े ध्यान से देखता, समझने की कोशिश करता। कभी-कभी वह बड़े विचित्र प्रश्न करके बड़ों को भी चक्कर में डाल देता-

एक दिन बालक धर्म प्रकाश बच्चों के साथ खेल रहा था, तभी उसकी माँ आई और उसे घर की ओर खींचते हुए बोली—

चल जल्दी तैयार हो जा, हम गंगा नहाने जा रहे हैं। गंगा नहाने से हमारे सारे पाप धुल जाते हैं।

कैसे पाप? मैं तो यहाँ नल पर ही नहा-कर अपना मैल धो लेता हूँ!

बेटा! तू नहीं जानता, हम जाने-अन-जाने में जो गलत काम करते हैं, उन्हें पाप कहते हैं। भगवान उन पापों का दण्ड देकर हमें नरक में डाल देते हैं। और वहाँ बड़ा दुःख भोगना पड़ता है। गंगा में नहाने से हमारे पाप धुल जाते हैं और हम के दुःखों से बच जाते हैं।

माँ! मैंने तो ऐसा कोई पाप नहीं किया।

फिर माँ उसे जल्दी खींचती हुई घर पर ले गई।

गंगा तट पर, स्त्री-पुरुष बड़ी श्रद्धा और प्रसन्नता से डुबकी ले-लेकर नहा रहे थे। बालक धर्म प्रकाश दूर गंगा के किनारे बैठा कुछ सोच रहा था।

जय गंगा मैया।

हर-हर गंगे!

गंगा मैया ! तू भी बड़ी विचित्र चीज है। इतने सारे लोगों का पाप लेकर तू तो बहुत बड़ी पापिन हो गई तुझे कौन सा नरक मिलेगा ?

अचानक गंगा की लहरों में से निकल कर एक सुन्दर स्त्री बाहर आई और बालक से बोली –

बालक ! तू अभी बच्चा है। जब यह लोग अपने पाप अपने पास नहीं रखते तो इनके पाप मैं अपने पास क्यों रखने लगी?

क्या ? इनके पाप तुम नहीं रखती, तो उनका क्या करती हो?

तू देखती नहीं कि मैं समुद्र में जाकर गिरती हूँ। मैं इन सबके पाप ले जाकर वहीं डाल देती हूँ।

समुद्र क्या करता है इतने पापों का ?

मुझे क्या पता ? समुद्र से ही जाकर पूछ।

समुद्र के किनारे जाकर बालक ने देखा दूर-दूर तक पानी ही पानी। थोड़ा अन्दर जाकर उसने पानी पिया तो उसे खारा लगा। वह सोचने लगा --

गंगा ने ठीक कहा था कि वह सारे पाप समुद्र में डाल देती हैं, इसीलिए तो इसका पानी बहुत खारा है, सारे पाप जो इसमें समाये हैं।

अचानक समुद्र से आवाज आई-

अरे बालक! तू क्या समझता है, गंगा चतुर और मैं मूर्ख हूँ जो सबके पापों को अपने पास रखूँ?

क्या तुम भी इन पापों को कहीं और आगे कर देते हो?

जब आदमी अपने पाप को गंगा में, और गंगा उन पापों को मुझ में छोड़ देती है, तो फिर मैं उन पापों को अपने पास क्यों रखूँ? मैं भाप के द्वारा उन पापों को बादलों को दे देता हूँ।

अब बालक बादलों की ओर देख कर सोचने लगा कि उन पापों का बादल क्या करते हैं? यह जानने के लिए मुझे आकाश में जाना होगा। फिर वह बादलों के बीच जा पहुँचा—

हे बादल! तेरे अन्दर कितने पाप रहते हैं? देख! तेरा रंग भी कैसा काला-कलूटा है।

तू कहाँ से आया है, कैसी पागलों जैसी बातें करता है? मेरे पास पाप कहाँ से आए?

बालक बोला—

सब लोग अपने पाप गंगा में धोते हैं, गंगा समुद्र में डाल देती है, समुद्र भाप के साथ उड़ा कर उन पापों को तेरे पास भेज देता है, तो तू पापी हुआ कि नहीं?

अच्छा तो तू लोगों के पापों की बात कर रहा है? तो सुन, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

सबके पाप साथ लिए फिरता है और कहता है मेरा कोई दोष नहीं। माँ बता रही थी, पापियों को भगवान नरक में डालकर दुःख देता है।

बालक तू बालक ही ठहरा ! जब मैंने कोई पाप किया ही नहीं, तो भगवान मुझे नरक का दुःख कैसे दे सकता है ? भगवान कभी अन्याय नहीं करता। न्याय ही करता है।

बालक ने बादल से पूछा—

यह कैसा न्याय ? जिसने पाप किया है, वह अपने पाप गंगा में धोकर पवित्र हो जाता है। उसे दण्ड नहीं मिलता, तू कहता है कि ये पाप मैंने नहीं किये तो इन पापों का दण्ड किसे मिलेगा?

उन्हीं लोगों को मिलेगा, जिन्होंने पाप किये हैं।

वे तो अपने पाप गंगा में धोकर चले गए, अब उन्हें दण्ड कैसे मिलेगा?

उन सबों को दण्ड मैं दिलवाता हुँ। भगवान् ने मुझे यही काम दिया है। गंगा और समुद्र के द्वारा जिन-जिन लोगों के पाप मुझे दिये गए हैं, मैं वर्षा की बूँदो के साथ उन सबके पापों को उन सब तक पहुँचाता हुँ।

क्या, तुम सब पापों को उनके करने वालों पर ही वर्षा देते हो?

और नहीं तो क्या, अपने पास रखूँगा? ऐसे तो ईश्वर की व्यवस्था ही बिगड़ जाएगी। भला अपने किये पापों से बिना फल भोगे कोई कैसे छूट सकता है? ये लोग जानते नहीं कि परमात्मा कितना बड़ा न्याय-कारी है? उसके दण्ड से कोई नहीं बच सकता। सबको अपना किया कर्म भोगना ही पड़ता है।

* पाप कर्मों से बचने का कोई उपाय नहीं है। किसी भी प्रकार का कोई उपाय करके पापों के फल से बचा नहीं जा सकता। हमारे अच्छे-बुरे सब कर्मों का फल हमें भोगना ही पड़ता है।

ओ३म्

विद्यार्थियों के आठ अवगुण

आलस्य

नशा करना

मूर्खता

लोभ-लालच करना

दुःखी असफल विद्यार्थी

चंचलता

अभिमान 'घमंड करना'

जड़ता
कभी पढ़ना कभी न पढ़ना

व्यर्थ इधर-उधर की
बातें करना

जीवन में सफलता और उन्नति पाने के लिए विद्यार्थी अपने ये दोष दूर करें।

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स

प्रकाशक-वितरक

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006

फोन: 011-43781191

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़ नई दिल्ली -1 फोन न. 011-23360150, 23365959

email: aryasabha@yahoo.com website: delhisabha.com

प्रचारार्थ मूल्य : 25/-₹ मात्र